IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उषा प्रियवंदा का उपन्यास महिलाओं की स्थिति को दर्शाता है

स्नेहा सुमन, शोध छात्रा, हिंदी विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. भारती कुमारी, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

सारांश-

हिंदी साहित्य में महिलाओं को एक आदर्श व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो स्वेच्छा से अपनी सामाजिक रूप से सौंपी गई भूमिकाओं को स्वीकार करती है और जब उसका मन इन बंधनों से भटक जाता है तो वह शर्म और अपराध की भयानक भावना से उबर जाती है। साहित्य में महिलाओं की छवि कुछ हद तक समाज की मौजूदा वास्तविकता से उभरती है और कुछ हद तक इसके ज्वलंत मुद्दों के प्रति लेखक की संवेदनशीलता से उभरती है। एक आत्मनिर्भर, साहसी और मजबूत, व्यक्तिगत, एक उपलब्धिकर्ता के रूप में, एक नेता के रूप में समाज द्वारा सौंपी गई भूमिकाओं के अलावा अन्य भूमिकाएँ साहित्य में बहुत कम पाई जाती हैं और ये भी महिलाओं की व्यक्तिगत क्षमता की असाधारण विविधता का प्रतिनिधित्व करती हैं। भारत के पुरुष प्रधान समाज में, जहां एक पुरुष और एक महिला के बीच एक प्लेटोनिक रिश्ता असामान्य है, एक महिला के व्यक्तिगत स्व को बहुत कम मान्यता और सम्मान मिलता है। विशिष्ट भारतीय महिलाओं की वैयक्तिकता एक विशेष रूप से पुरुष उन्मुख संस्कृति की पृष्ठभूमि के साथ-साथ पुरुष प्रधान दृष्टिकोण से अभिभूत थी। कुछ लेखकों ने अपना ध्यान न केवल बाहरी स्थिति पर केंद्रित किया है संघर्ष लेकिन आधुनिक महिलाओं के आंतरिक विकार पर भी महिलाएं समाज का आवश्यक और महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। प्राचीन भारतीय परंपरा में स्त्री को पुरुष की अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार किया गया है। नारी प्रतिद्वंदी नहीं बल्कि पुरुष की पूरक है। यूं तो महिलाओं के बिना पुरुष का जीवन अधूरा है लेकिन समय के साथ महिलाओं की स्थिति बदतर होती गई।

यह पेपर महिला लेखिकाओं द्वारा अपने उपन्यासों में भारतीय महिलाओं के दर्द को चित्रित करने को प्रस्तुत करता है। हिंदी साहित्य में उन महिलाओं का चित्रण किया गया है, जो सामाजिक रूप से सौंपी गई भूमिकाओं को स्वेच्छा से स्वीकार करती हैं। साहित्य सदियों से मानव समाज का प्रतिबिंब है। यह मानवीय भावनाओं और विचारों का वर्णन करने का सबसे शक्तिशाली माध्यम रहा है। सदियों से हम पुरुष और महिला की सामाजिक रूप से अपेक्षित भूमिका के बीच एक बड़े अंतर को स्वीकार करते आए हैं। उनमें से प्रत्येक के साथ जन्म से कुछ सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियाँ जुड़ी हुई हैं। मनुष्य को ईश्वर की विभिन्न रचनाओं पर प्रभुत्व रखने वाली श्रेष्ठ प्रजातियों में विश्वास किया जाता है। यह भेद सदियों से साहित्य में अत्यंत प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है। 20वीं सदी के अंत में जीवन में विलीन स्त्री, असामयिक पर महिला उपन्यासकार ने निराशा और अंधकार को समेटते हुए नारी के अस्तित्व में अकल्पनीय योगदान दिया है। साहित्य के क्षेत्र में यह सराहनीय है। मैंने कुछ प्रसिद्ध हिंदी महिला लेखिकाओं के उपन्यासों को देखना चुना है। रचनात्मक कार्य लिखने वाली महिलाओं का पितृसत्तात्मक व्यवस्था के खिलाफ अपने आंतरिक विद्रोह के साथ एक पुराना बंधनकारी संबंध है। उपन्यास लिखने की शैली दर्शकों को आकर्षित करने और प्रभावित करने तथा लक्षित समाज की सोच में कुछ बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मुख्य शब्द: साहित्य, समाज, स्वतंत्रता, महिला, चित्रण, हिंद

प्रस्तावना

प्रागैतिहासिक खोज से पता चलता है कि यह दुनिया शुरू से ही पुरुष प्रधान रही है। वैदिक युग में नारी का स्थान सम्माननीय था और उसका स्थान बहुत ऊँचा माना जाता था। यद्यपि उस युग में पितृसत्तात्मक समाज नहीं था, लेकिन उस युग में महिलाओं के प्रति बहुत ही अंतहीन दृष्टिकोण था। महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में बहुत महत्व था। महिलाओं को अध्ययन की सुविधा भी प्राप्त थी। उन्हें अपने पति के धार्मिक और सामाजिक कार्यों में समान अधिकार प्राप्त थे। आर्यन का मानना था कि महिला पूर्ण सम्मान और स्नेह की हकदार है। वैदिक काल के बाद महिलाओं की स्थिति में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन आये। वैदिक काल में जीवन को आनंद माना जाता था। बाद में ऋषि ने जीवन में सुख की आशा को अधिक महत्व दिया। बौद्ध धर्म ने महिलाओं और पुरुषों के लिए समान रूप से आध्यात्मिकता के द्वार खोले। उस युग में महिलाएँ पूर्णतः आत्मनिर्भर हो गई थीं।

उषा पियानवादा साठ के दशक के उभरते लेखन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनकी रचनाओं में भावपूर्ण क्षणों की प्रस्तुति है। उषा पियानवाड़ा एक व्यक्तित्ववादी उपन्यासकार हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में महिला जीवन की उम्र संबंधी विसंगतियों को चित्रित किया। उषा प्रियंवदा के उपन्यास पचपन खंबे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका, शेष यात्रा और अंतर्वंशी हैं। इन उपन्यासों का मुख्य विषय स्त्री मनोविज्ञान है। इन उपन्यासों में आधुनिक नारी की छवि स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। विशेषकर इसका संबंध शिक्षित उच्च एवं मध्यम वर्ग से है। अपने व्यक्तित्व को स्वाभिमानी एवं स्वावलंबी बनाने पर चिंतन करें। पचपन खंबे लाल दीवारें की किरदार सुषमा उच्च शिक्षित आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिला थी लेकिन उसने धन के कारण अपनी शादी के बारे में कभी नहीं सोचा था। अपने परिवेश से कटकर, वह खुद को अकेली पाती है। अपने सूनेपन को भरने के लिए, वह प्यार की तलाश में है जिन रिश्तों से वह वंचित हो गई है. सुषमा ने एक तरह से परिवार की जिम्मेदारियों में बढ़ते नील की बलि चढ़ा दी। "रुकोगी नहीं राधिका" का किरदार राधिका एक आधुनिक महिला है। वह पुरुष का प्रभुत्व सहन नहीं कर सकती। वह किसी के सामने झुकना नहीं चाहतीं. वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व चाहती है और खुद को स्थापित करने के लिए वह लगातार संघर्ष करती रहती है। शेष यात्रा की अनु उपन्यास के शुरुआती भाग में एक पारंपरिक भारतीय महिला के रूप में उभरी है, और उत्तरार्ध में आधुनिक के रूप में उभरी है। महिलाओं के बीच संघर्ष और उनके जीवन की गतिविधियों को प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है।

हिन्दी साहित्यकारों में मन्नू भंडारी का योगदान सर्वाधिक सराहनीय है। उनके महिला किरदारों में विविधता है. उनमें से कुछ परंपरागत रूप से सौंपी गई भूमिका से ऊपर उठे हुए हैं जबकि अन्य मूक पीड़ितों की रूढ़िवादी छवि से चिपके हुए हैं। मन्नू भंडारी ने अपने लघु कथा साहित्य में समाज के बारे में अपनी सूक्ष्म टिप्पणियों का सफल चित्रण किया है। अनिता माइल्स ने यहां ठीक ही कहा है, "लिंग आधारित समाज के सदस्य के रूप में एक महिला के जीवन के अनुभव उसके मानस का निर्माण करते हैं। इसके अलावा, वह कुछ अन्य कारकों से बंधी होती है जैसे कि उसकी व्यक्तिगत परिस्थितियाँ, उम्र, वर्ग, नस्ल आदि से संबंधित समाज की अपेक्षाएँ। इस प्रकार प्रत्येक महिला का जीवन का अनुभव अलग और इसलिए अद्वितीय होता है। 1 मन्नू भंडारी ने परिवार और समाज में महिलाओं की सामाजिक और सांस्कृतिक तस्वीर को एक विशिष्ट आयाम प्रदान करने में योगदान दिया है। ये भेदभावपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य, दृष्टिकोण और व्यवहार जो महिला मानस के व्यक्तित्व को कमजोर करते हैं, उनकी कहानियों में उजागर हुए हैं। यहां मैं भंडारी की दो कहानियों 'सज़ा' (द सेंटेंस) और 'एक कामज़ोर लड़की की कहानी' पर चर्चा करना चाहूंगी। भंडारी यहां मूलनिवासी और अर्जित विचारों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के अपने प्रयासों के साथ-साथ शिक्षा के बाद उनकी समस्या का भी पता लगाती हैं। आशा के पिता को बीस हजार रुपये के गबन के लिए सजा सुनाई जानी थी जो वास्तव में किसी और के द्वारा किया गया था। उसे उसकी नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया है और उसके (आशा के) मामा (मामा) जो अभी इंग्लैंड से लौटे हैं, ने उसके पिता को बचाने की सारी ज़िम्मेदारी ली। आशा और उसकी माँ समाज के अन्याय की मूक पीड़ित हैं जबकि आशा की चाची (चाचा की पत्नी) को दबंग और साहसी के रूप में दर्शाया गया है। भंडारी अक्सर अपने नायकों को या तो किए गए अन्याय से अनजान रखती हैं या उसके प्रति पूरी तरह से चुप रखती हैं।

मध्यकाल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति

मध्यकालीन उत्पत्ति कला और महिमा का काल था। युद्ध के मैदान में युद्ध के मैदान से थके हुए, अपने दरबार में विलासिता की महिमा और केवल महिला के आकर्षण में, मन की खुशी शांति पाने में है। मुगल काल के अंत तक नारी त्रासदी चरम पर पहुंच गई।

प्राचीन काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति

प्रागैतिहासिक खोज से पता चलता है कि यह दुनिया शुरू से ही पुरुष प्रधान रही है। वैदिक युग में नारी का स्थान सम्माननीय था और उसका स्थान बहुत ऊँचा माना जाता था। यद्यपि उस युग में पितृसत्तात्मक समाज नहीं था, लेकिन उस युग में महिलाओं के प्रति बहुत ही अंतहीन दृष्टिकोण था। महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में बहुत महत्व था। महिलाओं को अध्ययन की सुविधा भी प्राप्त थी। उन्हें अपने पति के धार्मिक और सामाजिक कार्यों में समान अधिकार प्राप्त थे। आर्यन का मानना था कि महिला पूर्ण सम्मान और स्नेह की हकदार है। वैदिक काल के बाद महिलाओं की स्थिति में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन आये। वैदिक काल में जीवन को आनंद माना जाता था। बाद में ऋषि ने जीवन में सुख की आशा को अधिक महत्व दिया। बौद्ध धर्म ने महिलाओं और पुरुषों के लिए समान रूप से आध्यात्मिकता के द्वार खोले। उस युग में महिलाएँ पूर्णतः आत्मनिर्भर हो गई थीं।

आधुनिक काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति

आधुनिक समय में महिलाओं के प्रति सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाया गया, कुछ समाज सुधारकों ने उन भ्रांतियों का विरोध किया, जिन्होंने महिलाओं के जीवन को दयनीय बना दिया था। ब्रह्म समाज, आर्य समाज जैसे संगठनों ने सती प्रथा, बाल विवाह और देवदासी प्रथा का विरोध करके महिलाओं की स्थिति को मजबूत करने का सफल प्रयास किया। दो विदेशी महिलाएं, मार्गरिट, एनी बेसेंट, भारतीय नारी के उत्थान की ओर पहला कदम बढ़ाती हैं। इंदिरा गांधी, सिरिमाओ भंडारनेके, अल्मेडा मर्कस और बेगम नुसरत भुट्टो महत्वपूर्ण पदों पर प्रतिष्ठित थीं।

मन्नू भंडारी के उपन्यास में महिला चित्रण का प्रतिनिधित्व

साठ के दशक की सबसे मशहूर लेखिका मन्नू भंडारी। उन्होंने साहित्य की कई विधाओं में लिखा है। उसकी रचना दुनिया उसके अनुभव को जी रही है। उन्होंने की सूक्ष्म भावनाओं को चित्रित किया है उपन्यास, कहानी, नाटक और साहित्य में नारी मन। मूल रूप से मन्नू भंडारी जी ने यह दर्शाया है कि आधुनिक समाज में कैसे एक परिवार छोटी-छोटी बातों से परेशान हो जाता है, जो पहले अपने दिन बहुत सुख से बिताते थे, इस प्रकार का चित्रण हमें भंडारी जी के साहित्य में पता चलता है। मन्नू भंडारी का पहला उपन्यास "आपका बंटी" है। यह एक मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास है. इस उपन्यास के अंतर्गत पति-पत्नी के बीच तलाक के कारण बच्चों की मानसिक स्थिति पर घटते प्रभाव का वर्णन है। "एक इंच मुस्कान" उपन्यास पति डॉ. राजेंद्र यादव के सहयोग से लिखा गया है। "त्रिशंकु" नई कहानी आंदोलन से संबंधित मन्नू भंडारी की प्रसिद्ध कहानी है। त्रिशंकु कहानी में समृद्ध और परिष्कृत नैतिकता पर जोर देने वाले पति पत्नी और उसकी किशोरी तनु की सांत्वना की कहानी। इस क्षेत्र में कई नाटक भी लिखे गए हैं। उनका तीन सूत्रीय नाटक "बिना दीवारों वाला घर" 1965 में प्रकाशित हुआ है। इस नाटक में, जब पति पत्नी के बीच कोई तीसरा व्यक्ति आता है, तो संदेह का सवाल कैसा होता है और यह पूरे घर को कैसे बर्बाद कर देता है? यह नाटक पुरुषों और महिलाओं की तनावपूर्ण स्थिति और उनके सामाजिक व्यक्तित्व संबंधों को व्यक्त करने के लिए लिखा गया है। मन्नू भंडारी की भावना अत्यंत समसामयिक है.

उषा प्रियंवदा की लेखनी में महिलाओं का चित्रण

उषा पियानवादा साठ के दशक के उभरते लेखन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनकी रचनाओं में भावपूर्ण क्षणों की प्रस्तुति है। उषा पियानवाड़ा एक व्यक्तित्ववादी उपन्यासकार हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में महिला जीवन की उम्र संबंधी विसंगतियों को चित्रित किया। उषा प्रियंवदा के उपन्यास पचपन खंबे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका, शेष यात्रा और अंतर्वंशी हैं। इन उपन्यासों का मुख्य विषय स्त्री मनोविज्ञान है। इन उपन्यासों में आधुनिक नारी की छवि स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। विशेषकर इसका संबंध शिक्षित उच्च एवं मध्यम वर्ग से है। अपने व्यक्तित्व को स्वाभिमानी एवं स्वावलंबी बनाने पर चिंतन करें। पचपन खंबे लाल दीवारें की किरदार सुषमा उच्च शिक्षित आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिला थी लेकिन उसने धन के कारण अपनी शादी के बारे में कभी नहीं सोचा था। अपने परिवेश से कट जाने के कारण, वह खुद को अकेला पाती है। अपने सूनेपन को भरने के लिए वह उन प्रेम संबंधों की तलाश में है जिनसे वह वंचित हो गई है। सुषमा ने एक तरह से परिवार की जिम्मेदारियों में बढ़ते नील की बलि चढ़ा दी। "रुकोगी नहीं राधिका" का किरदार राधिका एक आधुनिक महिला है। वह पुरुष का प्रभुत्व सहन नहीं कर सकती। वह किसी के सामने झुकना नहीं चाहतीं. वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व चाहती है और खुद को स्थापित करने के लिए वह लगातार संघर्ष करती रहती है। शेष यात्रा की अनु

उपन्यास के शुरुआती भाग में एक पारंपरिक भारतीय महिला के रूप में उभरी है, और उत्तरार्ध में आधुनिक के रूप में उभरी है। महिलाओं के बीच संघर्ष और उनके जीवन की गतिविधियों को प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है।

निष्कर्ष

मैं इस अवलोकन के साथ निष्कर्ष निकालना चाहूंगा कि मन्नू भंडारी और उषा प्रियंवदा ने मध्यम वर्ग की महिलाओं का प्रभावशाली चित्रण किया है, जो अक्सर शिक्षित होती हैं लेकिन एक ऐसे समाज में अपने ज्ञान को मूर्त रूप नहीं दे पाती हैं जो लड़कियों की शिक्षा को उनके चरित्र और घरेलू कार्य अनुभव से अधिक कोई मूल्य नहीं देता है। . भंडारी ने अपने महिला पात्रों के दिलों में व्याप्त विद्रोह को चित्रित करने की कोशिश की है, लेकिन उन्हें कभी आवाज नहीं दी। उनकी कहानियों में बेटी, पत्नी, मां के रूप में महिलाओं का हाशिए पर जाना स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। उन्हें सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से दबाया जाता है। उनके लेखन को नारीवादी के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है लेकिन नारीवाद को थोड़ा और आगे बढ़ाने की जरूरत है। मैं भारतीय कथा साहित्य में महिला पात्रों के बारे में इंदु प्रकाश पांडे के अवलोकन के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहूंगी, "हिंदी नारीवादी लेखकों का स्वर उदासीन है, वास्तव में दुखद भी नहीं है क्योंकि उनकी परिस्थितियों को उनके पक्ष में बदलने के लिए कुछ करने का कोई वीरतापूर्ण प्रयास नहीं किया गया है। शायद ही कोई महिला पात्र अपनी इच्छा पूरी करने के लिए आगे बढ़कर निर्णय लेने और कार्य करने का साहस दिखाती है। भले ही महिला पात्रों ने कुछ साहस दिखाया हो... उनका विद्रोह अश्रुपूर्ण समर्पण में समाप्त होता है। शुरुआत में जो भी थोड़ी सी आग आपको जलती हुई दिखती है, वह कहानी के अंत तक आपके ही आंसुओं से बुझ जाती है।"

संदर्भ

1- अनीता: अंग्रेजी में नारीवाद और उत्तर-आधुनिक भारतीय महिला उपन्यासकार। नई दिल्ली: सरूप एंड संस, 2009. पी. नंबर 3.

2- पांडे, इंदु प्रकाश. महिलाओं द्वारा लिखित हिंदी उपन्यासों में रोमांटिक नारीवाद। नई दिल्ली: हाउसऑफ लेटर्स, 1989।

3- पांडे, इंदु प्रकाश. महिलाओं द्वारा लिखित हिंदी उपन्यासों में रोमांटिक नारीवाद। नई दिल्ली: हाउस ऑफ लेटर्स, 1989.इंट.जे.इंजी.लैंग.लिट एंड ट्रांस.स्टडीज(आइएसएसएन:2349-9451/2395-2628) खंड.3.अंक.4.2016 (अक्टूबर-दिसंबर)

4- अनुराधा शर्मा बीसवीं सदी की महिला कथा (अनुवाद) मन्नू भंडारी की 'सज़ा' का 'द सेंटेंस' के रूप में अनुवाद मनीषा चौधरी द्वारा। बीसवीं सदी की महिला कथा (अनुवाद)

5- मन्नू भंडारी की 'एक कामज़ोर लड़की की कथा' का अनुवाद मनीषा चौधरी द्वारा 'एक अधीनस्थ लड़की की कहानी' के रूप में किया गया। सुनील. सीमा, 'भारतीय कथा साहित्य में नई नारी का उद्भव: भारती मुखर्जी की पत्नी का एक अध्ययन, शशि देशपांडे की 'दैट लॉन्ग साइलेंस' और आर.डब्ल्यू. :प्रेस्टीज बुक्स;1995.पी.नं. 219.

6- डॉ देवेश ठाकुर प्रसाद के नारी चरित्र नवयुग प्रकाशन दिल्लीP-32.

7- PadminiSenGuptaWomenWorksOfIndiaAsiaPublishingHouseP.7.

8-प्रियंवदा उषा शेषयात्रा राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।

9-शर्मानासिराशाल्मलीकिताबघरप्रकाशननईदिल्लीतृतीयसंस्करण1994।

10-शर्मानासिराठीकरेकीमंगनीकिताबघरप्रकाशननईदिल्लीद्वितीयसंस्करण1996।

11- शास्त्री शशि प्रभा शिधियां नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 1974। 28. शास्त्री शशि प्रभा परछाइयों के पीछे नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 1977।

12- शास्त्रीशशिप्रभाक्योनकीनेशनलपब्लिशिंगहाउसनईदिल्ली1980.30.शास्त्रीशशिप्रभा नवीन राजकमल पेपर बाक्स नई दिल्ली 1990।

13-सक्सेनाप्रभाटुकडनमीबंताइंद्रधनुषराजपालएंडसन्सडेल्ही1980।

14- अज्ञेय नदी के द्वीप सरस्वती प्रेस दिल्ली.1 33. डॉ. छवि समकालीन महिला उपन्यास्करों की अस्तित्व वादी चेतना एसएस प्रकाशन दिल्ली। 34. 1985-1999.

16-.जूनकृष्णाशिवानीकेउपन्यासनमेंनारीविमर्श।

17-सिंघलशशिभूषणशिवानीकेसाक्षात्कार23सितम्बर1989।

18- इला चन्द्र जोशी प्रेत और छाया भारती भण्डार इलाहाबाद पृष्ठ 406. 19- अग्निहोत्रीकृष्णकुमारिकायेंइन्द्रप्रस्थप्रकाशनदिल्ली1978।

20- अग्निहोत्रीकृष्णनीलोफ़रनेशनलपब्लिशिंगहाउसनईदिल्ली1988।

21- अग्निहोत्री कृष्णा बात एक औरत की इन्द्र प्रस्थ प्रकाशन कृष्णा नगर दिल्ली 1998। 8. अंसल कुसुम उस तक पराग प्रकाशन दिल्ली 1979।

22- अंसलकुसुमअपनीअपनीयात्रासरस्वतीविहारदिल्ली1981।

23- अंसलकुसुमउसकीपंचवटीहिंदीपुस्तककेंद्रआसफअलीरोडदिल्ली1990।

24- भगतमंजुलअनारोराजकमलपेपरबक्स, दिल्ली1996।

25- भगतमंजुलतिरछीबौछाररराजकमलपेपरबक्स, दिल्ली।

26- भंडारी मन्नू आपका बंटी राधाकृष्णन प्रकाशन नई दिल्ली 1989। 27.प्रियंवदा उषा पचपन खंबे लाल दीवारियां राजकमल प्रकाश नई दिल्ली 1984। 28-प्रियंवदा उषा रुकोगी नहीं राधिका राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली। 24.